फुहार
लेखिका :
चांद 'दीपिका'
गृह क्रमांक 323 कोटली कालोनी,
जम्मू तवी - 180005
मोबाईल : 9419694912
दूरभाष : 0191 2583955

फुहार

चाँद 'दीपिका'

अनुक्रम

अपनी बात

गायिका विशेष कभी नहीं रही। पर संगीत तो जैसे प्राणों में घड़कन बन बसा है। एकान्त क्षणों में गीत भजन गुनगुनाने में बेहद आनन्द आता है। बचपन में आर्यसमाज के सत्संगों में भजनीकों द्वारा गाये गीतों को बड़े चाव से सुना करती थी तथा एकान्त पलों में गुनगुना भी लिया करती थी। छिटपुट भजन अपने भी बना कर लिखे। फिर कथा कहानी कविता में उलझ कर रह गई। रामपुर राजौरी में भी कुछ एक भजन लिखे फिर शीघ्र ही विराम लग गया। लेखनी कविता को लेकर चलती रही। बीच–बीच में कुछ एक भजन और लिखे उन्हें यदाकदा एकान्त पलों में गुनगुनाती रही। अपने बनाए गीतों को अपनी ही धुनों पर गुनगुनाना मंन को एकाग्र करने का सरल साधन था। प्रारम्भ में लेखन की गति अत्यन्त धीमी थी फिर पिछले एक आध वर्ष में तीव्र हो गई। अचानक मस्तिष्क में जैसे मेघ घुमड़ने लगते। बड़े वेग से बहुत कुछ बाहिर आने को मचलता। कागज कलम उठा शब्दों का परिधान पहिनाते आत्मगान आत्मा के गीत बन गए।

बहुत सुना है ईश्वर के विषय में। उससे प्यार भी किया है। पर उसे देखने जानने का प्रयास नहीं हो पाया। इस संसार में माया की चकाचोंध इस कदर चुंधिया देने वाली है कि उसके प्रकाश तक पहुँच पाना हो ही नहीं पाता। आकर्षणों के जाल में फंसा मन उसके लिए सहज में सोच भी नहीं पाता। उस तक पहुँच पाना तो दूर उसे जान लेना भी मीलों दूर से कौड़ी ढूँढ लाने के समान दुष्कर है। कभी क्षीण सा आभास होता है कोई निकट अत्यन्त निकट समीप विद्यमान है। प्रतिपल देख रहा है। कभी गहन रहस्यमयी चुप्पी बरसों बातचीत, आभास नहीं। जड़ शरीर जड़ मन स्वयं में क्या जाने उसकी अनुभूति उसका आनन्द !

परमात्मा सत् चित आनन्द। रस से लबालब भरपूर। आत्मा सत् चित फिर भी जैसे रीति (खाली)। आनन्द की तलाश में आत्मा भटकती है।

प्रकृति की एक एक वस्तु को निचोड़ कर देखती है। शायद अमृत मिल जाए। कभी उदास, हताश, कभी संशय, विभ्रम, मूढ़ता। सुख और आनन्द में क्या अन्तर है पता नहीं। बार बार जानी पहचानी चीजों में, रिश्तों में (बेकार क्षणिक) शहद पा जाने को दौड़ती है। सिर पटकती है। प्रयास हर बार निष्फल होते हैं। पर आशा है कि मरती नहीं।

परमात्मा ठोस वस्तु, चीज तो है नहीं। भाव, मोल लगाकर खरीद लिए जाएं। क्या करे आत्मा किधर जाए? अन्धे अनाम रास्ते। संसार में जो दिखाई दे रहा है उसके भी छिन जाने का डर सताता है। परमात्मा मिल भी जाए, आनन्द मिल भी जाए तो भी संसार का मोह आगे नहीं बढ़ने देता। राह रोक लेता है।

आत्मा केवल आत्मा ने ही तो उसे देखभाला है उसके सानिध्य के आनन्द को चखा है। तभी तो वो पपीहे की भांति उसे एकमात्र उसे पुकारती है। अजीब सी कशमकश। उस के पास जाया भी न जाए उसके बिना रहा भी न जाए। जीवन के बीहड़ों में निपट एकांकी चलते कभी अंगार तो कभी फुहार बरसती है। सांसारिक रिश्तों का बोध भी उसे भूल जाता है। शिकवे भी उसी से, शिकायत भी उसी से, रूठना मानमनोवल भी उसी से। थकीहारी कलान्त पराजित आत्मा पुकार उठती है 'मैं अब कहीं नहीं जाऊँगी, तुझे बस तुझे रिझाऊँगी। भले ही मन लगे न लगे शरीर भले ही बगावत कर ड़ाले मुझे ठुकराना नहीं।

झुलसाती गरमी के पश्चात् फुहार का अपना आनन्द है। सोम बरसता है। आत्मा हर्ष से झूम उठती है।

फुहार, मन्द मन्द फुहार! कष्ट कलेश सब बह गये प्रीतम मिल जाये तो कुछ नहीं चाहिए।

शरीर में मस्तिष्क क्या कमाल का यन्त्र है। Audio-Vedio (दृश्य श्रव्य) रीले दिन रात चलती हैं। पता नहीं कहाँ से कब शब्दों के निर्झर झर झर बहने लगते हैं। गीत संगीत के स्वर फूट पड़ते हैं।

बहुत सोचती हूँ यह सब क्या हो रहा है। शब्दों को सहेज कर कागज पर उतार देखती हूँ तो लगता है यह तो गीत है यह तो गेय है गान है हृदय से फूटे आत्म गान हैं।

लिखते सहेजते गुनगुनाते खो जाना कभी–कभी ईश्वर के निकट ले आता है। दिल करता है गाती रहूँ गुनगुनाती रहूँ उसकी महफिल से खुशियां भर लाती रहूँ।

उसका उपहार बहुमूल्य है क्यों न अम्बर के तारों की भांति हृदय फलक पर शब्दों की कलियों को घर दिया जाएं ताकि जब भी समय का पन्ना उड़े गीतों की सुगन्ध से जीवन महक उठे।

जब तक फुहार बरसे तनिक शरीर को भी स्वस्थ बना ले। बी.पी. (Blood Pressure) आदि रोगों के चक्कर में नहीं आना है। हर पल मुस्कुराते जीवन्त बने रहना है। राष्ट्र विश्व के प्रति भी जागरूक रहना है। यहीं तो ज़िन्दगी है। यहीं तो बन्दगी है। हंसी खुशी का एक ही रहस्य जब परमात्मा साथ हो।

गीतों में भाव हैं। संगीत में शक्ति है। आत्मगान गुनगुना कर तो देखिए कितना सकून कितनी राहत मिलती है। डूब कर हृदय से गाने से कैसे भीतर फुहार बरसती है। मन का कलमष (पाप), तपिश कैसे बुझती है।

मेरे आराध्य, गीत भी आपके शब्द भाव भी आपके, कागज कलम सब कुछ आपका। मेरी लेखनी आपके लिए सदैव प्रस्तुत है। स्नेह का नन्हा सा एक सद्यः विकसित पुष्प आपके चरणों में सादर समर्पित है। मर्त्य हूँ मरणधर्मा हूँ। कमियों खामियों से भरपूर। रिझाने का ढँग नहीं आता फिर भी अकुशल प्रयास एक पग आपकी ओर जाने अन्जाने में बढ़ाया है। स्वीकार करना।

इदन्नमम् यह मेरा नहीं सब प्राणियों में बसे हृदयेश्वर आपके लिए बस आपके लिए !

धन्यवाद एवं आभार– पुस्तक के लिए दो शब्द लिखने के लिए अपनी संस्कृत गुरु डॉ. वेद कुमारी धई जी का तथा श्री चैन लाल शास्त्री जी का जिन्होंने पुस्तक की प्रूफ रीडिंग करने में सहायता की।

चांद दीपिका
गृह क्रमांक 323 कोटली कालोनी,
जम्मू तवी–180005
मोबाईल : 9419694912
दूरभाष : 0191–2583955

दो शब्द

चांद 'दीपिका' द्वारा लिखित हिन्दी पंजाबी के उन के बहत्तर भजनों का यह संग्रह कई रंग के फूलों से गुंथी माला है जिस के माध्यम से उन्होंने अपने मनोभावों को अभिव्यक्ति दी है। इन भजनों में प्रभु भक्ति का रंग तो मुखर है। लेखिका का भक्त मन कभी निराश दीखता है जैसे– "तुझे ढूंढते हैरां हो गई हूं" (गीत 17) में तो कभी उस प्रियतम की झलक पा कर धन्य हो जाता है "मुझ को सब कुछ मिल गया" (भजन 50) जब प्रभु ही श्वास श्वास में समा जाता है "श्वास श्वास रोम रोम दिल में समा गया" (भजन 16) तो मस्ती ऐसी चढ़ती है कि उतरती ही नहीं "मैनूं चड़ गई ओ३म् शराब" (भजन 49) और सब से बधाई पाने की मनःस्थिति बन जाती है (भजन 62)। जब प्रियतम स्वयं घर पर मिलने आ जाते हैं तो हृदय कमल खिल जाता है और जन्म जन्म की साधना सफल हो जाती है (भजन 53)। कुछ गीतों में अजर अमर ईश्वर की विशेषताओं का वर्णन है (भजन 1, 3, 4, 12) तो कुछ मन की विशेषता बखानी गई है (भजन 47) कुछ भजन देशभक्ति के भी हैं (भजन 70, 71, 72)। मैं चांद जी को उनके इस प्रयास पर बधाई देती हूँ।

प्रो० वेद कुमारी घई
(राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त)
08-02-2013
Ex-Professor (Sanskrit) Dean (Arts)
Jammu University
Resi. : 15/2 Trikuta Nagar, Jammu-180012

कोटि–कोटि प्रणाम

ब्रह्मा, विष्णु, महेश, शिव
गाएं जिसके गान
ऐसे देवाधिदेव को
कोटि–कोटि प्रणाम।

अजर अनादि, अनन्त है
सर्वेश्वर सर्वाधार
महिमा जिसकी विचित्र है
माया अपरम्पार
ऐसे देवाधिदेव को
कोटि–कोटि प्रणाम।

जिसकी इच्छा के बिना
हिले न कोई पात
लता गुल्म न उग सके
न हो रात प्रभात
ऐसे देवाधिदेव को
कोटि–कोटि प्रणाम।

जिसके अद्भुत रूप का
वेद करें बखान
ऋषि, मुनि, योगी एकांत में
करते जिसका ध्यान
ऐसे देवाधिदेव को
कोटि–कोटि प्रणाम।

सृष्टि के कण–कण बसे
नजर न फिर भी आए
सूर्य चन्द्र वातायन से
देखे और मुस्कराए
ऐसे देवाधिदेव को
कोटि–कोटि प्रणाम।

जिससे शक्ति पा शक्तिमान बन
नर करे सदा परोपकार
दुष्ट नराधम नीच का
करे सदा संहार
ऐसे देवाधिदेव को
कोटि–कोटि प्रणाम।

जिसके आगे पीछे न
लगे न कोई नाम
सुख शान्ति विश्रांति का
जो है पावनधाम
ऐसे देवाधिदेव को
कोटि–कोटि प्रणाम।

रचना जो देखी आपकी

रचना जो देखी आपकी दिल निसार हो गया ।
मुझे प्रभु जी आप से प्यार हो गया ।।

जिंक्र आया आपका भूले जुबान पर ।
मिलने को आपसे जिया बेकरार हो गया ।।

सखा बनाया आपको चमत्कार हो गया ।
कल तक था जो फिसड्डी शाहसवार हो गया ।।

तपते हृदय पे नेह की बूंद जब पड़ी ।
शुष्क बंजर अन्तः स्थल गुलजार हो गया ।।

चमके हृदय पटल पे जो आप एक बार ।
भरपूर रोशनी से मेरा संसार हो गया ।।

प्राणों के देश बज उठी अनहद की बाँसुरी ।
भूला जो अपना आप तो दीदार हो गया ।।

थर्राई जुबां शान में कसीदे ना पढ़ सकी ।
आंखो ने झट से कह दिया हमें प्यार हो गया ।।

क्यों डरूँ मैं चक्रवात आंधी तूफान से ।
नियन्ता सारे जगत का आधार हो गया ।।

मन रमा तन रमा सब कुछ था रम गया ।
मेरी मैं तेरी तूँ ओंकार हो गया ।।

तुम मिले जब मिले उल्फत की रात थी ।
गर्दिश भरा हर दिन मेरा त्यौहार हो गया ।।

तेरी इनायतें झमाझम बरसी थी उम्र भर ।
गुस्ताखियां जो देखी अपनी शर्मसार हो गया ।।

तुमको तलाश भक्त की मुझको थी देव की।
यूँ जन्मजन्मान्तरों का आपसे इकरार हो गया ।।

नक्षत्र ब्रह्मांड सृष्टियां खेल खिलोने थे तेरे ।
रत्नों जटित आकाश देख दीदावार हो गया ।।

दिखती अदायें थी तेरी कड़कती बिजलियों में खूब ।
तेरे हुस्नों इश्क में डूब के गिरफ्तार हो गया ।।

परचम था झूलता था 'चांद' नस नस पे हेकड़ी
तूने जो देखा गौर से मिस्मार हो गया ।

मुझको पसंद न आयेगी तुमसे बढ़के शै
बिन मौल भाव हाट तेरा तलबगार हो गया ।

मुझको मरने जीने का न था तनिक शऊर ।
सोहबत में रह के जांनशीं दिलदार हो गया ।।

अब तो ले चलो मुझे आकाश से परे
दुनियां का लटका झटका बहुबार हो गया ।

अपना पता बता या मुझे गोद ले उठा
चलना अनादि अनन्त राह मुझे दुश्वार हो गया ।

रह लूंगा अदृश्य बीयबान में जन्मान्तरों में साथ
तूँ हुक्म अपने ले चला मैं शाहकार हो गया ।

शिकवा रहा न दीदं का आमद का ना गिला
मंजिल चौराहे मोड़ पें मददगार हो गया ।

ओ३म्...........ओ३म्

ओ३म्, ओ३म्, ओ३म्
ओ३म्, ओ३म्, ओ३म्
दाए ओ३म्, बाएं ओ३म्
ऊपर नीचे, ओ३म् ही ओ३म्
ओ३म्, ओ३म्........................... ।

तन में ओ३म्, मन में ओ३म्
रोम–रोम, ओ३म् ही ओ३म् –
ओ३म्, ओ३म्............।

रात ओ३म्, प्रातः ओ३म्
आशा किरण, विश्वास ओ३म्
ओ३म्, ओ३म् ....।

वसुधा ओ३म्, व्योम ओ३म्
नक्षत्र सृष्टि, ब्रह्मांड ओ३म्
ओ३म्, ओ३म् ....।

श्वास ओ३म्, प्रश्वास ओ३म्
उद्भव प्रलय, विकास ओ३म्

ओ३म्, ओ३म् ....।

अनन्त ओ३म्, अनादि ओ३म्
सर्वेश सर्वाधार ओ३म्
ओ३म्, ओ३म्..................।

अजर ओ३म्, अमर ओ३म्
अभय पवित्र, निर्विकार ओ३म्
ओ३म्, ओ३म्..................।

ज्ञान ओ३म्, ध्यान ओ३म्
प्राण, अपान, व्यान ओ३म्
ओ३म्, ओ३म् ....।

शुद्ध ओ३म्, बुद्ध ओ३म्
न्यायकारी, दयालु , ओ३म् ओ३म्
ओ३म्, ओ३म् ....।

आनन्द ओ३म्, उजास ओ३म्
सरिता सलिल आभास ओ३म्
ओ३म्, ओ३म् ....।

मेरे प्यारे प्यारे ओ३म् जी

मेरे प्यारे प्यारे हां......सहारे.....सहारे
ओ३म् जी...
ओ मेरे प्यारे.......................................।

मेरे ओ३म् सत् सतावान हैं
करुणाकंद करुणा निधान हैं
चित् चेतन है सब कुछ जानते
आनन्द आनन्द का भंडार हैं।

ओ मेरे प्यारे.......................................।

मेरे ओ३म् सर्वशक्तिमान् हैं
रचे अनन्त सृष्टि ब्रह्माण्ड हैं
न्यायकारी हैं न्याय करें सदा
दयासिंधु हैं दया के अवतार हैं

ओ मेरे प्यारे.......................................।

मेरे ओ३म् निराकार हैं
रंग रुप न कोई आकार है
शरीरधारी न कोई अवतार है
सर्वेश्वर हैं सर्वाधार हैं

ओ मेरे प्यारे.......................................।

मेरे ओ३म् जन्म न ले कभी
फल कम न ज्यादा दें कभी
पालक पोषक हैं करते संहार हैं
अनुपम, अजर, निर्विकार हैं

ओ मेरे प्यारे.......................................।

मेरे ओ३म् अनादि अनन्त हैं
झुके चरणों में दिक् दिगन्त हैं
शुद्ध बुद्ध पवित्र सृष्टिकर्ता हैं
सर्व व्यापक दुःखों के हर्ता हैं

ओ मेरे प्यारे.......................................।

दीआ भक्ति

दीआ भक्ति दा मने च जगाई रखदी
ओ दीआ भक्ति दा............।

काम–क्रोध, लोभ मोह अहंकार न चन्दरे
पंजे चोरें कोला लड़ छड़काई रखदी
ओ दीआ भक्ति दा............।

प्रभु मेरे सत चित आनन्द सागर
मैं ताँ डुबकी पे डुबकी लगाई रखदी
ओ दीआ भक्ति दा............।

दिक्खने च आऊँ सब्भै कम काज करदी
नजर चोरी–चोरी उन्दे ते टकाई रखदी।
ओ दीआ भक्ति दा............।

के पता कुस्स बेलै लब्भी जान अन्दर
मैं ता दिनें राती अलख जगाई रखदी
ओ दीआ भक्ति दा............।

दुनिया दी गैल रस्ता भुल्ली न जाआ
मैं ता हत्थ उन्ने गी फड़काई रखदी

ओ दीआ भक्ति दा............।

जन्म जन्मातरें दे प्रभु मेरे साथी
मैं तां उन्दे कशा किश न छपाई रखदी
ओ दीआ भक्ति दा............।

दिक्खी–दिक्खी उन्ने गी मन नई रज्जदा
मैं तां दिल्लै कन्ने उन्ने गी लगाई रखदी
ओ दीआ भक्ति दा............।

सब्मनै च बसदे न मेरे परमेश्बर
मैं ता सब्मै कन्ने हिरख लगाई रखदी
ओ दीआ भक्ति दा............।

'चांद' गी नेंइ औन्दा तेरा आरती बदंन
मैं तां चरणे च कवता चड़ाई रखदी
ओ दीआ भक्ति दा............।

ऐत्थे ओथे सब पासे

ऐत्थे ओथे सब पासे ईश दा वस्तार ऐ
मैं हां ओहदी ओह है मेरा सब्भना नाल प्यार ऐ
प्राणां विच बैठा नित वंसरी बजावन्दा
शुष्क नीरस ज़िन्दगी च फुल्ल भक्ति– खिलावन्दा
मैं हां ओह्दी ओह है मेरा मैनू ओहदा ही अधार है।

इकली उदास होवां झट गले लावन्दा
मिट्ठी मिट्ठी लोरी गा के मन परचावन्दा
औकड़ा दा संगी साथी मेरा सिरजनहार है ।

विषयां दे नाल जदो मन भज जावन्दा
अन्दरों आवाज दे कुराहे तो बचावन्दा
ओही मेरा गुरु सच्चा मेरी सरकार ऐ ।

लोकी भावे लक्ख आक्खन मैं नइयों इकली
ओस दी है ओट ले मेरी आत्मा है निकली
ओही मेरा पालक पोषक मेरा तारणहार है ।

दुःख न शरीक जापे न कदे डंगदा
दुःख विच सुख बैठा लुक लुक हसदा
रब्ब नाल मलान्दा छेती बड्डा दिलदार ऐ ।

मेरी आत्मा दा प्रभु नाल प्यार हो गया

तर्ज – अज्ज मथुरा विच..........

मेरी आत्मा दा प्रभु नाल प्यार हो गया
हां सच्ची मुच्ची
मेरा पोटा–पोटा ओस ते निसार हो गया
हां सच्ची मुच्ची ।

ओहदे वांग मैनू कोई वी न लब्मदा,
ओहदे वांज मेरा कम्म नईयो सरदा ।
स्वांस रोम मेरे ओसदा अधिकार हो गया –
हां सच्ची मुच्ची–
मेरी आत्मा दा .... ।

ओह है मेरा मैं ओसदी हो गई
ओहदे विच डुब्बी मैं खो गई
अक्खां मीटदया ओस दा दीदार हो गया
हां सच्ची मुच्ची–
मेरीं आत्मा दा .... ।

धूड़ मिट्टी पापां वाली हट गई
धुंध विषयां वकारां वाली छट गई ।
दिन रात मेरा रंगला त्यौहार हो गया
हां सच्ची मुच्ची–
मेरी आत्मा दा .... ।

झांत मारा जदों अन्दरों ओह लब्भदा,
भेद खोल सब्भौ मेरे अग्गे रखदा ।
मेरा आपा घुल एकम् ओंकार हो गया–
हां सच्ची मुच्ची–
मेरी आत्मा दा .... ।

ओहदे हुन्दे चिन्ता वाली गल्ल नहीं,
धोखे छल फरेब वाला वल्ल नहीं ।
डर मौत यमराज दा बेकार हो गया–
हां सच्ची मुच्ची–
मेरी आत्मा दा .... ।

'चांद' मोई ते ओह है लब्भया
मेरा रोआं–रोआं फुल्ल बन खिड़या
मेरी आत्मा दा ओह शंगार हो गया
हां सच्ची मुच्ची–
मेरी आत्मा दा .... ।

मेरे प्रियतम मेरे भगवन

तर्ज – बचपन की मुहब्बत को...............

मेरे प्रियतम मेरे भगवन
जरा मुझ पे दया करना
संसार बसे न मन में
बस इतनी............

तेरे घर से बेघर हो
क्या खज्जल ख्वार हुई
जग भूल भूलैय्या फंसकर
कैसी गिरफ्तार हुई
मैं भूल गई हूँ रस्ता
पता घर का बता देना।

पूजा की रीत कोई
न मुझको आती है
तस्वीर तेरी कोई
न जेहन में आती है
मुझ बुड्डे की लाठी बन
पथ अपने चला देना।

चोला हुआ बदरंग है
कोई रंग न चढ़ता है
रंगले सब हार गये
जरा फर्क न पड़ता है
तूँ बड़ा ललारी है
मेरे चोले को रंग देना।

इक घर में रहते हैं
और बात नहीं होती
तेरे मेरे मिलने की
कोई रात नहीं होती
दीदार को जब तड़पू
चिलमन को हटा देना।

सब शर्मो हया तज के
दर तेरे पे आई हूँ
जख्मों से भरा सीना
दिखलाने को लाई हूँ
थक टूट चुकी कब की
मुझे अपना बना लेना।

चाहे कुछ भी कहे कोई
मैं तेरी ही बेटी हूँ
गिर घिसट फिसल चल के
तेरी गोद में लेटी हूँ
देना जो सजा जी भर
न खुद से जुदा करना।

जीवन एह बीत जावे

जीवन एह बीत जावे
तैनू प्यार करदे करदे
पलकां न मेरी झपकन
दीदार करदे करदे।

मन विच रवे न चिन्ता
खलड़ी विच डर रवे न
मैं दुःख झनां तो लंघा
तेरे नाल हसदे हसदे।

छल–छल छलकदे रहवन
खुशियां भरे समन्दर
बरसा मैं बन के बदली
तैनू याद करदे करदे।

जीवन दी बंसरी ते
तेरा ओ३म् नाम निकले
मस्ती विच नच्चां गावां
गुणगान करदे करदे।

दुःख तो आते हैं

दुःख तो आते हैं
दुख तो आते हैं
दिल दुलराते हैं
बड़ा समझाते हैं।

दुःख तो साथी हैं
युगों की थाती हैं
सदा बनवासी हैं
लोड दिखाते हैं
राह सुझाते हैं।

दुःख तो केवट हैं
सच्चे सेवक हैं
भव पार कराते हैं
रब्ब से मिलाते हैं।

दुःख तो सहारे हैं
बड़े ही प्यारे हैं
भ्रम को मिटाते हैं
बुद्ध बनाते हैं।

दुःख तो जलाते हैं
खूब पिघलाते हैं
खोट मिटाते हैं
अजाद कराते हैं।

दुःख तो दर्पण हैं
करते सब कुछ अर्पण हैं
मुखौटे खींच दिखाते हैं
बाहों में भींच रुलाते हैं।

दुःख तो पाठशाला हैं
तीक्ष्ण तीव्र हाला हैं
वीरों की जय माला हैं
अनुभव की मधुशाला हैं।

दुःख तो इष्ट मितर हैं
पावन शुद्ध पवितर हैं
झाड़ झंखाड़ जलाते हैं
अन्तस वैभव दिखलाते हैं।

तेरे दर्शन पाऊँ

प्रभु मेरे प्रभु मेरे
तेरे दर्शन पाऊँ।
तेरे नाम की ओढ़ चुनरिया
छोड़ के सुन्दर जग की नगरिया
तेरे रंग में प्रेम दीवानी
वैरागन हो जाऊँ –
तेरे दर्शन...।

श्रद्धा का आसन
प्रेम की बाती
मन की जोत
जले दिन राती
ले इकतारा तेरे नाम का
दर–दर अलख जगाऊँ –
तेरे दर्शन पाऊँ...................................।

दुख का गरल हो
विपत्ति की हाला
जर्जर तन पर
विषधर माला
मृत्युपथ पर चलते चलते
मन्द मन्द मुस्काऊँ –
तेरे दर्शन...।

अन्तस फूटा प्रकाश फव्वारा
ज्योतित हुआ मन प्राँगण सारा
प्रियतम छवि सुन्दर मन भावन
रज–रज दर्शन पाऊँ –
तेरे दर्शन पाऊँ.................................।

तज के झूठी मान मर्यादा
अहंकार का उतार लबादा
छोड़ गठरिया लोभ मोह की
रंग तेरे रंग जाऊँ –
तेरे दर्शन पाऊँ.................................।

पाथेय बना तेरा सहारा
छल–छल छलके पीयूष जलधारा
आनन्दस्रोत में आंकठ डूब कर
रस विभोर हो जाऊँ –
तेरे दर्शन पाऊँ.................................।

भगे तमिस्रा खिले ऊषायें
सिन्धु उर्मि झूला झुलाए
प्रणव की मादक मृदु सरगम पर
झूम–झूम लहराऊँ –
तेरे दर्शन पाऊँ.... ....।

जन्म जन्मांतरो से

तर्ज........ सौ साल पहले...........

जन्म जन्मांतरों से हमें प्रभु से प्यार था
आज भी है और कल भी रहेगा
उनसे मिलने को जिया बेकरार था
आज भी है और कल भी रहेगा ।

रवि चांद सितारों में, उसी की ज्योति दमकती है
सागर सरिता जल में उसी की छवि झलकती है
अनन्त सृष्टि ब्रह्मांड का वही आधार है –
आज भी है .... ।

वो सामर्थ्यवान ईश्वर, कोई पार न पाता है
बिन ज्ञान, समाधि के, पकड़ में वो न आता है ।
श्रद्धा प्रेम भक्ति का वही आगार है –
आज भी है .... ।

प्रभु सत्चित् आनन्द है निराकार कहाता है
वो अजर, अमर, अनुपम, अन्तरयामी कहाता है
परम पूजनीय, रक्षक वही करतार है –
आज भी है .... ।

प्रभु परमगुरू को हम हृदय से ध्याते है
उसकी हर इच्छा पे खुशी से बलि जाते हैं ।
सखा, स्वामी, बंधु वही संसार है –
आज भी है .... ।

प्रार्थना कर

जब छोड़ तुझे सब जाएं
भय व्याल तुझे आ सताएं
जब रोग शोक घिर आएं
प्रार्थना कर याचना कर ।

जब अपनी न हो कोई हस्ती
हो जोर जुल्म की बस्ती
जब विपदा आन सताए–
प्रार्थना कर याचना कर ।

दिन कातिल रात अंधेरी
माया की घुम्मन घेरी
जब मन पक्षी घबराएं–
प्रार्थना कर याचना कर ।

फैले हों घोर अंधेरे
दुबके हों ज्ञान सवेरे
जब संशय आन डराये –
प्रार्थना कर याचना कर ।

तूं जान बूझ अपराध न कर
हो जाए तनिक मलाल न कर
जब अखियां भर भर आएं –
प्रार्थना कर याचना कर ।

प्रभु गुण गाएं

प्रभु गुण गाएं मोद मनाएं
नाचें गाएं हो......... हो ।

बड़े प्रेम से मन मंदिर में
प्रभु भक्ति के दीप जलाएं–

प्रभु संग बोलें प्रभु संग गाएं
प्रभु पे वारी–वारी जाएं–

विष कानन है जग आकर्षण
उलझ पुलझ न जान गवाएं–

मघवन आए मधु–रस लाए
पी–पी न मन प्राण अघाएं–

दिव्य रंगों की पड़ें फुहारें
मन के गुलशन खिलते जाएं–

जहाँ पड़े चरण प्रभु के
वहाँ अंधेरे कभी न आएं–

जहाँ बहे प्रभु नाम की गंगा
सन्त वहाँ जा धूनी रमाएं –

न पूछो कौन मेरा माही

न पुच्छो कौन मेरा माही
जिस खातर धूनी रमाई
बुल्ला च भैड़ा हसदा फिरे
पता न भैड़ा दसदा रहे।

मारे रुप उहदा लषकारे
फिके पैन ब्रह्मांड नजारे
झाल उहदी झल्ली न जावे
होश मत कुज न रहे।

मेरे माही दी उच्ची हस्ती
रहन्दा सुच्चेआ दिलां दी बस्ती
चन सूरज हाजरी भरे
हवा हथ बन के तुरे।

उहदी प्रीत बड़ी है सुच्ची
न बंग कच्च वरगी कच्ची
धोखा छलवल न करे
प्यार रज रज के करे।

उहदा प्यार है शान्त समन्दर
ठर जावे मन अन्दरो अन्दर
खुशी खेड़ा नचदा फिरे
नाद उहदा वजदा रहे।

मैंनू चा उहदा है चड़या
मैं चरणां च आपा धरया
चीज उहदी जो वी करे
सुट्टे भाव दिल च धरे।

श्वास–श्वास, रोम–रोम

श्वास श्वास रोम–रोम दिल में समा गया
मैं ढूँढती थी जिसे मेरे पास आ गया ।

यह भी नहीं वो भी नहीं मन था मचल गया
पहली नजर में देखते मन को था भा गया
वो मेरे पास आ गया दिल में समा गया
श्वास, श्वास रोम–रोम..............।

उसकी चली ब्यार मन प्राण खिल गए
उजड़े हुए दयार में वसन्त छा गया
वो मेरे पास आ गया दिल में समा गया
श्वास, श्वास रोम–रोम..............।

विषयों के बीहड़ों में मैं जब भी भटक गया
हताशा भंवर में डूबते मुझको बचा गया
वो मेरे पास आ गया दिल में समा गया
श्वास, श्वास रोम–रोम..............।

मोड़ा था मुँह 'चांद' ने हाथों फिसल गया
पकड़ा जो उसका हाथ था झट साथ आ गया
वो मेरे पास आ गया दिल में समा गया
श्वास, श्वास रोम–रोम..............।

मैं रूठी–झगड़ी लाख थी ताने भी कस दिए
मैं तुमसे अलग न हो सकी न तुमसे रहा गया ।
वो मेरे पास आ गया दिल में समा गया
श्वास, श्वास रोम–रोम..............।

तुम हो मेरे, तुम हो मेरे, तुम हो आराध्य देव
युग के सुरों पे आत्मा था गीत गा गया
वो मेरे पास आ गया दिल में समा गया
श्वास, श्वास रोम–रोम..............।

तुझे ढूँढते हैरां हो गई हूँ

तर्ज – आवाज दे मुझे न बुलाओ ....

तुझे ढूँढते मैं हैरां हो गई हूँ
पता अपना अब तो बता दो हे भगवान ।

मेरे उजड़े मन में घना धुप्प अंधेरा
न चिड़िया की चहकन न आये सवेरा
बैठा है पग–पग विषयों का पहरा
लहराता सागर पापों का गहरा
मैं रो–रो के कब की सहम सी गई हूँ–
पता अपना अब तो .... ।

गमों की घटाएं जीवन घिर आई
लगती है दुनिया पराई पराई ।
कंटीली डगर मुँह खोले मगर हैं ।
जीवन में कैसा भीषण समर है ।
मैं घुट–घुट के मर मर जिये जा रही हूँ–
पता अपना अब तो .... ।

न पतवार कश्ती न मांझी न मंजिल
न उत्साह मन में न पैरों में थिरकन

अनजान बस्ती अंधेरा है उलझन
न संगीत कोई खुशी की न धड़कन
कारा दुःखों की मैं घिर सी गई हूँ –
पता अपना अब तो .... ।

बहुत जग में ढूँढा मिला न खिवैय्या
सखा तुम सा सुन्दर माता न भैय्या ।
हृदय में मरुस्थल विचारों की भटकन
कलेशों के टीले विवादों की अड़चन
मैं कर्मों की चक्की पिसे जा रही हूँ–
पता अपना अब तो .... ।

हृदय बैठे प्रियतम सुनो मेरी विनती
मिलन को तुम्हारे मैं निशदिन तड़पती ।
मैं खोटी खरी हूँ मैं फिर भी तुम्हारी
ठुकरा दो चाहे मैं तुम पे हूँ वारी ।
यहीं याचना 'चांद' किये जा रही हूँ–
पता अपना अब तो .... ।

शरण प्रभु की गर मन जो जाते

तर्ज – आवाज दे के मुझे न बुलाओ ....

शरण प्रभु की गर मन जो जाते
भटकते दर दर न यूँ मारे मारे
उसी को संगी सखा बनाते
न होते जग में यूँ बेसहारे

आनन्द सागर छल छल छलकता
मेघ अमृत रिमझिम बरसता
सहस्त्राशुंओं में विहंसते आसूँ
तृप्त होते मन प्राण सारे–
शरण प्रभु की ....।

रंग में उसके रंग ले खुद को
तद्‌रूप हो जा मिल के उसमें
वैतरणी नदिया फिसलते पत्थर
पार कर जा उसके सहारे–
शरण प्रभु की ....।

उसी के द्वारे अलख जमाले
उसी में मिल जा राख हो जा
शोक चिन्ता धर उसके कांधे
आजाद कर ले स्वयं को प्यारे–
शरण प्रभु की ....।

ब्रह्म मुझमें

ब्रह्म मुझमें ब्रह्म में मैं,
ब्रह्म मेरे आधार है।
ब्रह्म की छाया सघन में,
चलता मेरा व्यापार है ।

ब्रह्म बाहिर ब्रह्म भीतर,
ब्रह्म मुझमें विचर रहे ।
ब्रह्म मेरे जीवन में ज्योति,
चेतना है भर रहे ।
ब्रह्म की छल छल छलकती,
अजस्र प्रेम रसधार है ।

ब्रह्म ऊषा की लालिमा हैं,
ब्रह्म सांध्य दीप हैं।
ब्रह्म ह्दिय निकुंज बसते,
ब्रह्म गुणतीत हैं।
ब्रह्म नित नवीन नूतन,
ब्रह्म निराकार है ।

ब्रह्म सच्चिदानंद, सनातन,

अजर, अनादि, अनन्त है।

ब्रह्म से पूरित प्रकाशित,

ब्रह्मांड सृष्टि दिगन्त हैं।

ब्रह्म में हो ब्रह्ममय,

चलता सकल संसार है ।

ब्रह्म मेरे आत्मपावन,

ऐश्वर्य के भंडार हैं।

ब्रह्मबल से चलते जप तप,

उत्साह स्फूर्ति संचार है।

ब्रह्म से टपा–टप–टपकती आनन्द रस की धार है,

ब्रह्म केवल ब्रह्म से 'चांद' मुझको प्यार है ।

संडे हो या मंडे

तर्ज – संडे हो या मंडे ....

संडे हो या मंडे कभी न खाना अंडे
पड़ेंगे यम के डंडे हां देख लेना
हां सोच लेना।

सूरज चांद सितारे धरती जिसने आकाश बनाया है
सृष्टि के कण–कण जीवों में वो ही आप समाया है
जीव जन्तु सब उसके बन्धु मार न खाना बन्दे –
पड़ेगे यम के डंडे..............।

स्वाद जिह्वा का बहुत बुरा है इसके वश न आना
हत्यारे कातिल बन कर के मोद न मन में मनाना
सजा मिलेगी कम न होगी पड़ा जो इक दिन फन्दे –
पड़ेगे यम के डंडे..............।

जैसा तुझको अपना बच्चा कुल दुनिया से प्यारा है
मुर्गी को भी अपना चूजा आंखो का उजियारा है
मां के दिल को न ठेस लगाना मत कहलाना दरिन्दे
पड़ेगे यम के डंडे..............।

मूक आह बेजुबान की पाताल तुझे जा धंसायेगी
सोने की लंका यह तेरी आहों से जल जायेगी
पटक–पटक पटकेग सिर को कर्म पड़ेंगे न मन्दे
पड़ेंगे यम के डंडे..............।

मैं आ गई तेरे द्वार

मैं आ गई तेरे द्वार
दिया है सब कुछ तुझ पे वार
हुन मैं नईयों जाना जी

बना लिया तुझको अपना मीत
तूँ ही मेरा जीवन संगीत
अब तो तुझे रिझाना जी–
के हुन मैं नईयों जाना जी
मैं आ गई ....।

देख लिया झूठा यह संसार
एक सच्चा तेरा आधार
अब तो तुझे मनाना जी
के हुन मैं नईयों जाना जी
मैं आ गई............ ।

एक तूँ ही मेरा नाथ
पकड़ लिया अब तो तेरा हाथ
चाहे जले जमाना जी
के हुन मैं नईयों जाना जी
मैं आ गई............ ।

छोड़ दी नैय्या विच मंझधार
डुबो दे चाहे मुझे दे तार
मुझको पार लगाना जी
के हुन मैं नईयों जाना जी
मैं आ गई............ ।

भावे लगे मेरा न मन
बगावत कर डाले यह तन
मुझको न बिसराना जी
के हुन मैं नईयो जाना जी
मैं आ गई............ ।

वर्षा कर दो

वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा भगवन वर्षा कर दो
शुष्क हृदय को मेरे भगवन जलाथल जलथल कर दो।

बह जाए अध कल्मष सारे पावन पावन कर दो।
मुझे समाकर निज में अपने आनन्द आनन्द भर दो।

तुम्हारे सुर में मिला के स्वर को आत्मा संगीत सजाए।
छम छम नाचे झूमे गाएं मस्ती मस्ती भर दो।

खुशियां बाटूं खुशियां भर दूँ खुशियां–खुशियां कर दूँ।
बरसे फुहारे झमाझम जीवन पुलकित–पुलकित कर दो

तुम्हें न छोड़ूँ तुम्हे न छौडू भाव हृदय में भर दो
दुनिया का हर मानव भगवन अपना–अपना कर दो

फिसल न जाऊँ पथ से तुम्हारे भीतर कस के पकड़ लो
कर्म नियन्ता बन कर भगवन शंकर–शंकर कर दो

तुम तुम तुम तुम भाव हृदय में भर दो
मैं जिऊँ मेरा विश्व भी जीवे मुझको वर वर दो।

मन मेरे न धन की कामना उच्च शिखर की न लालसा
भव बंधन से मुझे छुड़ाकर अपना–अपना कर दो

कुहरे की फैली चादर में हम तुम ढँक ढँक जाएं
दुष्ट दुराग्रही पकड़ न पाये ओझल–ओझल कर दो

जलते तपते विकल प्राणों को आनन्दामृत भर दो।
अमर प्रेम हमारे को भगवन शाश्वत–शाश्वत कर दो।

प्रभु जी मेरे मन मंदिर आएं

प्रभु जी मेरे मन मन्दिर आए ।
अनहद नाद बजे दिन राती
काया मंगल गाए
प्रभु जी मेरे .... ।

अश्रु उतारे प्रभु की आरती
श्वासों ने चंवर झुलाएं
प्रभु जी मेरे .... ।

जगर मगर हुई काल कोठरी
सूरज कई चढ़ आएं–
प्रभु जी मेरे .... ।

रिमझिम आनन्द मेघा बरसे
पुलक पुलक मन जाए–
प्रभु जी मेरे .... ।

टूटी कड़ियां खुल गए बन्धन
न कोई आन डराए–
प्रभु जी मेरे .... ।

प्रभु में डूबी प्रभु सी हो गई
कोई कैसे भेद बताए –
प्रभु जी मेरे .... ।

बोल सखि तुझे क्या कुछ चाहिए
हंस हंस प्रभु बुलाएं –
प्रभु जी मेरे .... ।

न कछु चाहूं न कछु मांगू
तुम आए मन भाए–
प्रभु जी मेरे .... ।

मैं तो अपने पिया की जोगन

मैं तो अपने पिया की जोगन
जब से उन संग प्रीत लगी है
फीके लगे भोगन
मं तो अपने ....।

दिप दिप हृदय में ज्योति जले है
भस्म हुए सब ओगुण
मैं तो अपने ....।।1।।

श्वास पनघट बाजे है बंसी
जाना पड़े न खोजन
मैं तो अपने ....।।2।।

उन बिन हार श्रृंगार सब फीके
झूठा लागे जोबन
मैं तो अपने ....।।3।।

उनके रंग रंग हुई बावरी
देख न पाएं लोगन
मैं तो अपने ....।।4।।

'चांद' के प्रीतम सब के प्रीतम
न वैरी न सौतन
मैं तो अपने ....।।5।।

मैं सारा जग फोल मारया

तर्ज – (मैं जित्थे जित्थे वेखया तेरा नूर वेखया)

वे मैं सारा जग फोल मारया
लब्भया तेरे जेया न कोई

वक्त ने सौ सौ हल्ले कीते
गम दे अथरूँ रज–रज पीते
आस दीवे बुझ गए नी
आया लेन खबर न कोई–
वे मैं सारा ....।

फटड़ जे होई तूँ फट्ट मेरे सीते
चुन चुन कंडे सारे फुल्ल फुल्ल कीते
तूँ जदो मेरे नाल खड़या
पई वैरी दी जुरत न कोई–
वे मैं सारा ....।

जदो दा लड़ तेरा मैं जा फड़या
दुख दरिद्र कदे देहड़े न वड़या
फुल्ल फुल्ल खिड़ गये नी
रहया कंडा जीवन न कोई–
वे मैं सारा ....।

चरणां च रख दित्ती जीवन अर्जी
फाड़ भावे रख सुट्ट तेरी ऐ मरजी ।
सुरखरुँ 'चांद', हो गई ऐ
रहया डर त्राह न कोई–
वे मैं सारा ....।

मुझको अपना बनालो दयालु पिता

मुझको अपना बना लो दयालु पिता
मुझको इसके सिवा कुछ नहीं चाहिए
साथ तेरा जो मिल जाए मुझको अगर
संग दुनिया का मुझको नहीं चाहिए ।

रात अंधेरी हो पथ भी सुनसान हो
हो चमकती बिजलियां या तूफान हों
मैं बढ़ती चलूं, मैं चलती चलूं
मुझको मिल जाए तुमसे हिम्मत अगर ।

रत्न माणिक की मुझमें ख्वाहिश न हो
भोग भोगूं यह दिल में तमन्ना न हो
स्नेह कण मिल जाये जो दर से अगर
तो मैं जन्नत में रहना, न गवारा करूँ ।

रात ढलती रहे दिन निकलता रहे
चाहे दुनिया में हो जाए रद्दो बदल
तुम मेरे रहो, मैं तुम्हारी रहूँ
मुझको दुनिया की हो न कुछ भी खबर ।

तुम्हारी याद

तर्ज–बाबुल की दुआएं लेती जा.......

दुखों की काली बदली जब
मेरे जीवन पर घिर आती है
तब याद तुम्हारी आती है
सुखों को पाकर खो जाती हूँ
जग की मोह माया रम जाती हूँ ।
तुम धीरे–धीरे माया का परदा सरकाती हो
सत्य असत्य को लखकर के
जब आश्चर्य चकित हो जाती हूँ–
तब याद तुम्हारी आती है ।

मैं चाहती हूँ तेरे पास रहूँ
तुझ पर ही सदा विश्वास करूँ ।
तूँ मेरे मन का मीत बने
मैं प्यार में तेरे खो जाऊँ
शुभ भावों के सागर जब मैं डूब उतरती जाती हूँ–
तब याद तुम्हारी आती है ।

तुझको पाने की इच्छा जब
मन ही मन मैं करती हूँ
अन्तर. के कोने से तब आशंका उभरने लगती है

तुम मिल भी गई गर जो मुझको
इस जीवन का फिर क्या होगा
मोह माया रहित जीवन में भला सुख कैसे कहाँ होगा
देवासुर संग्राम में घिर कर जब मैं घबराने लगती हूँ –
तब याद तुम्हारी आती है ।

तुम दिव्य शक्तियों से सम्पन्न हो
मैं एक क्षुद्र सी आत्मा हूँ
तुम सूरज हो मैं चन्दा हूँ ।
तुम दीपक हो मैं जुगनु हूँ ।
पिछले पापों को लखकर के जब मैं पछताने लगती हूँ–
तब याद तुम्हारी आती है ।

मेरी पुकार करूण सुनकर के
तुम आने लगती हो मेरे पास
मैं तुझसे डर कर के
कर लेती हृदय के बंद द्वार
जब जग भी मुझे ठुकराता है–
तब याद तुम्हारी आती है ।

परहित

परहित जीना परहित मरना
जीवन लक्ष्य हमारा है।
खुशियों से जन जीवन भरना
यह ही धर्म हमारा है।

अपने लिए ही मरना जीना
भी क्या कोई जीवन है।
सेवा सुगन्ध बिना न खिलता
मानव जीवन उपवन है।
दीप से दीप जला कर करना
जगती में उजियारा है –
खुशियों से जन ....।

एक आँख से आंसू टपके
हम नहीं चैन से बैठेंगे
क्षुब्ध धरा के जला के कल्मष
सारे संकट धो देंगे।
ऊँच नीच न कोई जग़ में
हर मानव हमको प्यारा है
खुशियों से जन ....।

चहुँ ओर से जन–जन आओ

हिल–मिल अन्थक काम करें

चले अहर्निश बस्ती–बस्ती

आलस न प्रमाद करें

प्रेम प्यार की गंग बहे जब

जीवन धन्य हमारा है–

खुशियों से जन ....।

कल कल बहती नदियां

कभी नीर न पीती है

तृषा बुझा, हरियाली देकर

पर हित पल–पल जीती हैं

कांटों में खिल सुगन्ध बांटना

हम पुष्पों का नारा है

खुशियों से जन जीवन भरना

यह ही धर्म हमारा है ।

ढेरों प्यार मिला

तर्ज – जाने वो कैसे लोग थे जिनको.............

मित्रों ने ठुकाराया जीभर
जग ने दुत्कार दिया
शरण में आएं जब–जब उसकी
ढेरों प्यार मिला।

भ्रम, संशय, उद्वेग मिट गए
मिट गई चिन्ता सारी
दुःखों की दुनिया लगती अब
सुन्दर प्यारी–प्यारी
उसका बिगाड़े मृत्यु कैसे
तुझ सा आधार मिला।
शरण में आए........।

तुम हो जब अंग संग मेरे
जहर भी पी लेंगे
हंसते–हंसते तुम संग चलते
भव सागर तर लेंगे
कट गए तन मन के बंधन
मुक्ति आधार मिला
शरण में आए........।

आत्मा उड़ती फिरती प्रतिपल

उसके संग निशदिन
आनन्द कलश भर–भर लाती
सागर से निशदिन
दिन है सोना रात है चांदी
बढ़िया उपहार मिला।
शरण में आए........।

आ गए जब दर पे तेरे
अब तो न जाएंगे
श्रद्धा भक्ति के फूलों से
तुझे रिझाएंगे।
'चांद' को अब तो न कुछ चाहिए
जब जीवन सार मिला।
शरण में आए........।

मोहे कौन बंधावे धीर !

मोहे कौन बंधावे धीर प्रभु जी तेरे बिना
भरी भीड़ में निपट एकांकी
दीन हीन दरिद्र की झांकी
नैनों से छलके नीर
मोहे कौन बंधावे ....।

पाप ताप मुझे घेर डरायें
माया मोह मद जाल फसायें
चलें न कोई तदबीर
मोहे कौन बंधावे ....।

किस को अपनी पीर सुनाऊँ ?
किस दर जा के अलख जमाऊँ ?
मिलता न पीर फकीर–
मोहे कौन बंधावे ....।

घोर तमस का पर्दा हटा दो
शुभ्र ज्योति अन्तर छलका दो
नाचे पुलकित 'चांद' शरीर–
मोहे कौन बंधावे ....।

ध्यान करो मन ध्यान करो

तर्ज – प्यार किया तो डरना क्या !

अमृत झरणा झरता झर–झर
अमृत रस का पान करो
ध्यान करो मन ध्यान करो।

सृष्टि ब्रह्मांड का वो है चितेरा
सुन्दर सांझ है उजला सवेरा
झूम–झूम उसकी महिमा का
अन्तस में गुणगान करो –
ध्यान करो..............................।

तेरा ईश्वर तुझे पुकारे
भटक न भीतर आ जा प्यारे
प्यारे प्रियतम की आज्ञा का
प्यार से बड़ सम्मान करो –
ध्यान करो..............................।

भीतर तेरे लाल जवाहिर
सागर मिलके हो जा सागर
डूबो उसमें खो जाओ उसमें
शान्त सरोवर स्नान करो –
ध्यान करो..............................।

प्रभु न बोले मत घबराना
उलझन शंका न मन में लाना
सम्बल उनका हाथ पकड़ कर
तुम बस अपना काम करो।

छिपते छिपाते कब तक रहेंगे
आज नहीं तो कल तो मिलेंगे
छोड़ डगर अहंकार की झूठी
प्रभु चरणों विश्राम करो –
ध्यान करो..............................।

योग की अग्नि जला मेरे मनवा

योग की अग्नि जला मेरे मनवा
प्रीतम प्रिय को रिझा मेरे मनवा

युग बीते हैं उनसे बिछुड़े
दिन बीते हैं उखड़े उखड़े
विषय बेल है विष सम घातक
फल उसके मत खा मेरे मनवा–
प्रीतम प्रिय को ....।

आ चल मनवा श्वास के तीरे
बरसत आनन्द धीरे धीरे
बेठ के प्रियतम की गोदी में –
हृदय कलश छलका मेरे मनवा –
प्रीतम प्रिय को ....।

सन्तां दा कहना मन ले बंदया

संता दा कहना मन ले बंदया
करले संध्या हवन दो वेले।

राहु ते केतु अड़या कुझ नईयों करदे
अपनी करनी दा फल बीबा सबने भरदे
जादू जन्तरा दे चक्करां न पो बंदया –
करले संध्या हवन दो वेले।

इक्क रब्ब दे वीरा सब्म ने बन्दे
न कोई उच्चे न कोई नीवें
जात पात छुआछूत बसार बन्दया –
करले संध्या हवन दो वेले।

सृष्टि दा चक्कर चलदे ऐ रहना
आना जाना मुड़ ऐत्थे आना
मान न अहंकार कर बन्दया–
करले संध्या हवन दो वेले।

ऐसी शक्ति दो हे भगवान

ऐसी शक्ति दो हे भगवान
हर दम जपते रहें तेरा नाम
सत्यपथ पर चले
न किसी से डरे
दीन दुखियों की सेवा हो काम –
ऐसी शक्ति................।

ज्योतियों की ज्योति मेरा मन
भटके विषयों में यह रात दिन
भागता है वहाँ सुख नहीं है जहाँ
कभी न जाए तुम्हारी शरण
अपनी भक्ति से करो निर्मल
बन जाए शिव संकल्पों का घर
चलता ही चले बड़ता ही चले
सदा मुक्ति के पथ अविराम –
ऐसी शक्ति................।

प्राणाधार तुम्हीं एक हो
रक्षक कर्तार तुम्हीं एक हो
दुःख विनाशक तुम्ही आनन्ददायक तुम्हीं
तुझ सविता को वरते है हम
दे दो बुद्धि का दान हमें
और दे दो यह ज्ञान हमें
मैं मैं मैं नहीं, तूँ ही तूँ तूँ ही तूँ
यही भजते रहें आठो याम –
ऐसी शक्ति................।

ध्यान के समय अन्तस से गूंजे गीत

1. साधो कौन है देश तुम्हारा
किस की खातिर बने वैरागी
क्यों छोड़ा घर द्वारा
भस्म रमाये फिरते वन वन
कौन तेरा रखवाला?

2. साधो यह है देश बेगाना
युगों युगों से चलता आया,
इसमें आना जाना।

3. बीहड़ वन में निपट अंधेरा
उलझ पुलझ मत जाना –
करके जतन ओम् सिमर ले
पंछी ने उड़ जाना।

4. साधो, सुन्दर योग तुम्हारा
अच्छा किया तूने जग से कीन्हा
अग जग दूर किनारा –
मूसल पत्थर से क्या डरना
जब लिया उसका सहारा।

भटक–भटक

तर्ज – जाने वो कैसे लोग थे जिनको............

भटक–भटक कर हम हारे
जग में न प्यार मिला
जब आ बैठे प्रभु के द्वारे
ढेरों प्यार मिला ।

मिट गए दुःख चिन्ताएं सारी
भक्ति का कमल खिला
सुरभित हो गई श्वासें–श्वासें
सुख का आधार मिला –

बासा पुराना लगता था
नूतन संसार मिला
तन कुटिया से बाहिर निकले
विस्तृत आधार मिला –

लोक लोकान्तर घूम के देखे
और न छोर मिला
अनादि, अनन्त, अजन्मा, अनुपम
बारम्बार मिला –

ठुकराया जिस प्रभु को हमने
उसने आधार दिया
गोद में ले कर चूम चूम कर
भर भर प्यार दिया –

आ गया जब दर पे तुम्हारे
अब तो न जाऊँगा
श्रद्धा के फूलों से निशदिन
तुझे रिझाऊँगा

देदिप्यमान ईश्वर

अहंकार अस्मिता का जड़ से विनाश कर दो,
देदीप्यमान ईश्वर मुझमें प्रकाश भर दो ।

दुरितों को दूर करके सब भद्र भाव भर दो
देदीप्यमान ईश्वर मुझमें प्रकाश भर दो ।

मन प्राण शुद्ध कर दो बल ओज तेज भर दो
देदीप्यमान ईश्वर मुझमें प्रकाश भर दो ।

रीती रहूँ न जीती आकंठ प्यार भर दो
देदीप्यमान ईश्वर मुझमें प्रकाश भर दो ।

'चांद' मर के भी चल पड़ेगी जरा सिर पे हाथ धर दो
देदीप्यमान ईश्वर मुझमें प्रकाश भर दो ।

मनवा चल चलिए

मनवा चल चलिए प्रभु कोल
जिसदे मिट्ड़े– मिट्ड़े बोल ।

जिसदे नाम हे लुकी खुमारी
खशबु आवो मिट्ठी प्यारी
वजदे जिसदे अन्दरो ढोल

अन्दर बाहिर जिसदा पसारा
दिसदा रूप है न्यारा–न्यारा
दिल दे फाटक तूँ वी खोल–

दुःख दुःख करदे न रौंदे जाना
कर ले उसदा 'चांद' ठकाना
दुःख सुख नाल ओहदे ले फोल–

लिशकन थां–थां उसदे मन्दर
ओह तां रहन्दा दिल दे अन्दर
बह के सुन ले ओहदे बोल–

विषयों में खोके बन्दे

विषयों में खो के बंदे हुआ बेकरार क्यों ?
आयु तेरी बीत रही हुआ बेखबर क्यों ?

धन दौलत आदि ने तेरे संग न जाना है
भाई बन्धु ने भी तेरा न साथ निभाना है
प्रभु के शिवाय तेरा कोई न रिश्तेदार है।

कुछ सोच समझ बंदे तू किसलिए आया है ?
क्या लक्ष्य है तेरा और किस ने भेजा है ?
प्रभु ने है तुझको भेजा, लक्ष्य उसको पाना है,
दुनियां में रहकर फिर भी दिल न लगाना है।

काम, क्रोध, लोभ मोह आदि जब तुझे भरमाएं
सुपथ से हटाकर के कुपथ पर ले जाएं
करूण स्वर में करना फिर तूँ प्रभु से पुकार यह
अब तो नाथ शरण में ले लो आई तेरे द्वार रे।

साधो...............

साधो बीत गई है जवानी
अब तक मेरी आत्मा ने
कदर प्रभु की न जानी ।

मन मेरे में धूल है उड़ती
श्वासें है वीरानी –
साधो बीत गई........

विषय वासना राह रोक खड़े है
करते है मनमानी –
साधो बीत गई ....

मैला तन मन मैली आत्मा
जीवन है बेमानी–
साधो बीत गई ....

कहाँ बिठाऊँ प्रिय प्रियतम को
मैं अति क्षुद्र निभानी–
साधो बीत गई ....

भरे हाट में लुट रहा जीवन
बन चली दुखद कहानी–
साधो बीत गई ....

प्रीतम बसाया कभी न मन में
खाक सुखों की छानी–
साधो बीत गई ....

पाँव पकड़ प्रियतम के बैठी
मैं अबोध अज्ञानी –
साधो बीत गई ....

तूँ है प्रियतम

तूँ है प्रियतम तूँ ही है दुलारा
मुझको तेरा है बस इक सहारा

दुःख के भंवर में मैं जब डूब जाती
निराशा गहरी खाई जा गिराती
होता गुपचुप तेरा इक ईशारा।

कलियां मन की तू ही है खिलाता
आनन्द सागर में जा के नहलाता
खिलता आत्म कानन प्यारा–प्यारा।

लोरिया तेरी मुझे खूब भाती
योगनिद्रा में झट जा पहुँचाती
मन का दीपक जले प्यारा–प्यारा।

तेरे दर पे है खुशियां ही खुशियां
उमड़ बहती उफनती 'चांद' नदियां
बहता अजस्र प्रेम रस फुहारा........।

अष्ट चक्रों में कमल खुलते खिलते
राग रागनियों के मन्द स्वर उभरते
झूमता मदहोश कायनात सारा।

मुझसा कौन बड़ा बड़भागी

मुझसा कौन बड़ा बड़भागी
जाकी प्रीत है तुम संग लागी।

मेरे सिर पर हाथ तुम्हारा
योगक्षेम वहन किया सारा
निरखू तुझको सोती जागी–

सकल विश्व में तुमरा पसारा
विचरू पकड़ कर हाथ तुम्हारा
उड़ती फिरती मैं मदमाती–

ओ३म् मेरे आए

ओ३म् मेरे आए
ओ३म् मेरे आए
खुशियों की ढलयां
भर-भर लाए ।

चढ़-चढ़ गए
खुशियों के सूरज
फूलों की सुगन्ध ले
घर घर आए ।

खिल – खिल गए
तन मन के शगूफे
आत्मा विभोर हो
उड़ी उड़ी जाए ।

ओ३म् मेरे अन्दर
ओ३म् मेरे बाहिर
ओ३म् ही ओ३म्
नजर मुझे आए ।

काट डाले ओ३म् ने
सब भव बन्धन
ओ३म् मुझे मुक्ति में
ब्रह्मांड घुमाएं ।

ओ३म् की हो गई
'चांद' दीवानी
ओ३म् मेरी आत्मा में
झूमें नाचे गाए।

ओ३म् रस बरसे

ओ३म् रस बरसे
सोम रस बरसे
भीग भीग कर मेरी आत्मा
हर्ष–हर्ष हरषे ।

मन मंदिर में प्रभु विराजे
ज्योति कलश छलके
छल छलक–छलक छलके–
ओ३म्...................................।

काया की बज उठी बांसुरी
प्राण पायलिया छनके
छन छनन...... छनन छनके–
ओ३म्...................................।

अन्त वेले

अन्त वेले मुक्ति ओही पानगे
नां प्रभु दा जेहड़े जपदे जानगे ।

आवागमन दे चक्करां की आक्खना
हत्थ फड़ के जो प्रभु दा जानगे ।

आंधी तूफानां की उन्हां दा विगाड़ना
हसदे हसदे जो प्रभु नाल जानगे ।

आसरा प्रभु दा जिन्हा ने ले ल्या
पार किश्ती आप प्रभु जी लगान गे ।

ढाह के ढेरी बह गई क्यों 'चांद' तूँ
आप प्रभु जी आ के तैनू बचानगे ।

दि्ल च जिसदे आप प्रभु जी वस गए
खुशियां खेहड़े आप तुरदे आनगे ।

तेरी महफिल में बैठेंगें

तेरी महफिल में बैठेंगे
तेरे जलवे को देखेंगे
जहाँ को आजमाया है
तुझे भी आजमाएंगे ।

सुना है लापता है तूँ
बड़ी मुशकिल से
मिलता है ।
पता तेरा जा सिद्धों से,
योगियों से पूछेंगे ।

कर्म खोटे यदि राह
रोक के बैठे
तेरे दर सिर झुका कर के
घड़ी भर हम भी रो लेंगे ।

शिव दे संकल्प वाला मन होवे ओ३म् जी

कदे ऐत्थे कदे ओत्थे दूर–दूर दौड़दा
सुतयां बी भेड़ा मन भटकना नहीं छोड़दा ।
लक्ख आखां लक्ख ठाकां रस्सियां तुड़ावदा
संकल्प ते विकल्प रूझा हत्थ नईयों आंवदा
ज्योंतियां दी जोत है ते महाबलवान है
प्रकाश तो वद भज्जे डाडा वेगवान है
तेरी लगन रवे मगन मन मेरा ओम् जी
शिव दे संकल्प वाला मन होवे ओम् जी ।1।

जिहदी शक्ति नाल ज्ञानी हवन यज्ञ करदे
धीर वीर योद्धा युद्ध कर्म च जुटदे ।
अन्तःकरण विच बैठा यज्ञ है रचांवदा
इन्द्रियां दा पूज्य बन काज है करांवदा ।
बड़ा ही विलक्षण है अपूर्व यज्ञमान ऐ
प्रजावर्ग विच पान्दा मान ते सम्मान ऐ ।
धर्म कर्म रवे मगन मन मेरा ओम् जी –
शिव दे...................... । 2 ।

धृति, ज्ञान, चेतना दा जेहड़ा भंडार ऐ
मनन, चिन्तन, सिरजना दा आप आधार ऐ ।
तन भावे मिट जावे मन नइयों मरदा
ऐहदे बिना कोई कुज कम्म नइयों सरदा ।
प्राणिया दे विच रहन्दा, प्रकाश दा कोई नूर ऐ
कदे वी न खाली होवे सदा भरपूर है

दुर्गणां तों दूर रवे मन मेरा ओम् जी
शिव दे संकल्प वाला मन मेरा ओम् जी ।3।

भूत, भविख वर्तमान जेहड़ा सब जानदा
गूढ़ तो वी गूढ़ ज्ञान यथावत पावंदा
जिसदे करके सप्त होते यज्ञ करदे
ज्ञान कर्म साधना दे द्वार नवे खुलदे
अमरत दी फुहार बने मन मेरा ओम् जी
शिवे दे संकल्प वाला............ ।4।

ऋक् यजु साम अथर्व जिसदे विच वसदे
रथ दे ज्यों अरे नाभि विच वसदे
मन चित चेतना दा सूतरधार ऐ
इन्द्रिया दा राजा चलान्दा सब्भ व्योपार ऐ
इन्द्रिया दे पिच्छे कदे ऐ जे भज जावंदा
ज्ञानियां ते ध्यानियां नूं नाच है नचावंदा
सच्चा सुच्चा आज्ञाकारी मन होवे ओम् जी
शिव दे संकल्प............... ।5।

चतुर रथवान जीवें घोड़ेया न हकदा
मन वी मनुख लई थाई–थाई फिरदा
सदा ही जवान रहना बुड्डा नहीयों होवन्दा
भक्ति वाली राह फड़ मैल आत्मा दी धोवन्दा
मन जे प्रसन्न होवें सारे कम्म करदा
परमात्मा नूँ आप खुशी खुशी अग्गे अग्गे करदा
ज्ञानवान, स्याना, चतुर मन बने ओम् जी
शिव दे संकल्प...................... ।

भोर का इन्तजार क्यो ?

भोर का इन्तजार क्यों रात संवर भी जाएगी
कर्म करते रहो सदा तकदीर संवर भी जाएगी ।

किस्मत को यूँ न दोष दो निन्दा न रंग लाएगी
लहर समय की आई जो सब कुछ बहा ले जाएगी ।

छिप गए सितारे गर जुगनु तो बुझ न पाएंगे
मुरझा गए गर फूल जो दिल के कंवल खिल जाएंगे ।

ज़ख्मी है पैर तो गम है क्या जान निकल न जाएगी
चलना भले हो मीलों तक मंजिल जरूर आएगी ।

ख्यालों में डूबे मत रहो खुशियां फिसल रह जाएगी
उठ के खड़े जो जोश से बहारें भी लौट आएगी ।

मैंनू चढ़ गई

मैंनू चढ़ गई ओ३म् शराब
मस्ती उतरदी नई
मैं उड्डदी फिरा अकाश
मस्ती उतरदी नई ।

मन्दर पीवां मसीती पीवां
पीवां पीवां रज रज पीवां
रज रज पीवां हस हस जीवां
डाह्डी मिट्ठी मधुर स्वाद
मस्ती उतरदी नई–
मैंनू चढ़ गई ....।

बोतल बोतल जाम चढ़ावा
पी पी संगा न शरमावां
मैं पी लई, बेअन्त, बेहिसाब
मस्ती उतरदी नई–
मैंनू चढ़ गई ....।

न एह सम्भे न ए मुक्के
भर भर थक्का मुड़ मुड़ मंगे
छुट गए सारे दंगे पंगे
पापी बन गए चंगे चंगे
लोकी हो गए लाजवाब
मस्ती उतरदी नई–
मैंनू चढ़ गई ....।

दुनिया भर तो मांत्रिक आए
वैद्य कतैब स्याने आए
भस्मां काढ़े माजून ल्याये
फोलन ग्रन्थ कताबां बेहिसाब
मस्ती उतरदी नई–
मैंनू चढ़ गई ....।

ऐत्थों आवो ओत्थो आवो
तुसी वी आवो ओह् वी आवो
अमृत दे घुट पींदे जावो
एह है ओ३म् दी मस्त शराब
मस्ती उतरदी नई–
मैंनू चढ़ गई ....।

पी पी होया मस्त कलन्दर
मिट गए सारे दुःख दरिदर
प्रभु मेरे अन्दर प्रभु मेरे बाहिर
मेरे अन्दरों गूंजे नाद
मस्ती उतरदी नई–
मैंनू चढ़ गई ....।

चढ़ गई, चढ़ गई,
चढ़ गई, चढ़ गई
कड्ढ दुनियां तो प्रभु वल ले गई
लगी समाधि, आनन्द बेहिसाब
मस्ती उतरदी नई–
मैंनू चढ़ गई ....।

द्युलौक दी सैर मैं करदा
नक्षत्रां दी रौनक तकदा
अनन्त ब्रह्म दी सृष्टि वाला
आर पार कोई भेत न लब्भदा
मैं हो गया लाजवाब
मस्ती उतरदी नई–
मैंनू चढ़ गई ....।

कपिल कणाद ने सोम ऐ पीता
गौतम जैमिनी ने ज्ञान ऐ दीता
भगवान कृष्ण ने कुरुक्षेत्र विच
सुन्दर गीता ज्ञान ए दित्ता।
जीवन खिड़या फुल्ल गुलाब
मस्ती उतरदी नई
मैंनू चढ़ गई ....।

मुझको सब कुछ मिल गया

तर्ज – ला पिला दे साकिया..........

मुझको सब कुछ मिल गया
तुझको पा लेने के बाद,
धन्य जीवन हो गया
तुझ पे लुट जाने के बाद ।

पुष्प पुष्पित हो गई
मन की सूखी डालियां,
पवन झकोरों से हिल उठी
कर्ण कुंडल बालियां,
साज हृदय के बज उठे
तेरी झलक पाने के बाद ।
मुझको सब कुछ..........।।1।।

वैदिक ऋचाओं के खग
मादक मधुर रस घोलते,
बेसुध पड़े तन मन पपीहे
धीरे–धीरे डोलते,
आनन्द निर्झर बह उठे
तुझमें खो जाने के बाद ।
मुझको सब कुछ..........।।2।।

तुम जो बैठे दिल के प्रांगण
चप्पा चप्पा भर गया,
रोशनी की अजस्र धारा
अध कल्मष बह गया,
निश्चिन्त अब मैं हो गइ
सागर में मिल जाने के बाद।
मुझको सब कुछ...........।।3।।

मिल गया जब से पता
ऐश्वर्य के भंडार का,
चस्का मुझको लग गया
अब तेरे दीदार का,
अब कभी भी न उठूँगी
गोद में आने के बाद ।
मुझको सब कुछ...........।।4।।

अन्तिम समय जब आए

अन्तिम समय जब जाए
मृत्यु दुन्दभि बजाए
होठों पे मेरे भगवन
तेरा ओ३म् नाम आए।

सौ बिछुओं का डंक भी
मेरा न कुछ बिगाड़े
श्वासों का सफर हो पूरा
तेरी बाहों के सहारे
मैं खुद को भूल जाऊँ
मुझे तूँ ही नजर आए।

तुझसे लिपट के मुझको
सुध बुद्ध न रहे स्वयं की
सरसराहट चले बदन में
मादक तेरी छुअन की
मैं हंस के झट से चल दूँ
लेने को जब तूँ आए।

धूं–धूं चिता की लपटें
छूँ–छूँ गगन को जाए
अग्नि स्फुलिंगों में
छवि तेरी झिलमिलाए
मैं ढूँढू खुद को जब भी
तूँ ही हाथ मेरे आए।

हम तेरे संग नहीं जाएंगें (कव्वाली)

तर्ज– हमे तो लूट लिया मिलके हुस्न वालो ने

मौत आई जो ठेंगा दिखा जाएंगे
हम तेरे संग तेरे संग नही जाएंगे ।

कौन है तूँ तुझे हम नहीं जानते
तेरी सूरत तलक भी न पहचानते
आज इनायत यह कैसी बरपाई है
रहमतों की बारिश क्यों ले आई है
तेरे धोखे में हम तो नहीं आएंगे
तेरे संग.....................।

हम न आशिक तेरे न तुझसे आशनाई है
बिन बुलाए क्यों घर में घुसी आई है ।
खड़ी रह पड़ी रह न पिघल पायेंगे
तेरे संग.................।

जिसने भेजा है उसका जलवा दिखा
उससे हमको दे अरी, तो मिला
भेद तेरा हम तभी जान पाएंगे
तेरे संग ....।

धमकियां दे हमको डराना नहीं
लूट श्वासों का धन भाग जाना नहीं
जेल कारा को तोड़ निकल जाएंगे
तेरे संग ....।

हम भी पीठ वाले [illegible] नहीं
लाल आंखे दिखा बात मनाना नहीं
तेरे कुचक्रों से हम न डर पाएंगे
तेरे संग ....।

बहुत बनती हमारी है ओ३म् से
है वारी जवानी बड़े शौक से
तेरी हेकड़ी सब मिटा जाएंगे–
तेरे संग....................।

हमारे तो जन्मों से हो गए लगन
मन हमारा है कब का उनमें मगन
चीख चिल्ला हम तो न सुन पाएंगे
तेरे संग..................।

चली जा चली जा न वक्त बरबाद कर
द्वार बन्द है मुड़ मुड़ न फरियाद कर
ओ३म् के है ओ३म् संग जाएंगे
तेरे संग ....।

अपने आगे तेरी कोई हस्ती नहीं
इक मरघट सिवा तेरी बस्ती नहीं
हम ओ३म् में खुद समा जाएंगे
तेरे संग ....।

समझना कमजोर न हम को भूले कभी
फकीर है फिर भी इतने मजबूर नहीं
छक्के पल में तुम्हारे छुड़ा जाएंगे
तेरे संग ....।

माना जग में तुम्हारा कोई सानी नहीं
हम भी बेकार बेमानी नहीं
धज्जियां तेरी पल में उड़ा जाएंगे ।
तेरे संग.................... ।

तूँ ढूँढेगी इधर हम न नजर आएंगे
ब्रह्मरन्ध्र से निकल हम चले जाएंगे
हम दीवाने ओ३म् के ओ३म् संग जाएंगे
तेरे संग .... ।

लाव लश्कर का दिखाना गरुर नहीं
हम है बैठे कोई मजबूर नहीं
ओ३म् का बज्र उठा तुझसे भिड़ जाएंगे
तेरे संग.................... ।

प्रियतम घर मेरे आए

प्रियतम मेरे घर आए
झूम–झूम कर जियरा नाचे
हृदय कमल खिल आए
प्राण पपीहा कुहु कुहु बोले
घन सावन घिर आए –
प्रियतम मेरे घर आए

आनन्दमगन भई आत्मा
होश कछु न आए
जन्म–जन्म हुई सफल साधना
तप न मेल कराए –
प्रियतम मेरे घर आए

मैं मन्दी मेरा रथ है लंगड़ा ?
चिन्ता भय आन डराए
किस विध पाऊँ दर्शन उनके
मन कछु सूझ न पाए –
प्रियतम मेरे घर आए।

उड़ती फिरती भई बावरी

सुध बुद्ध होश गंवाए

भूल गई सब मन की बतिया

प्रीतम दर्शन पाए

प्रियतम मेरे घर आए

मुझको भेजा तन नगरी में

खुद भी न रह पाए

सुन पुकार मेरी कातर नीरव

झट प्रभु दौड़े आए

प्रियतम मेरे घर आए

प्रभु जी घर मेरे आए।

मैं की करां

मेरे मन दा दरपन काला मैं की करां
हाय.....हाय नी मैं की करां।

पाप पुण्य दा हिसाब नी कीता
लेखा जोखा साफ न कीता
मेरा निकलया खूब दवाला मैं की करां –
हाय.....हाय नी मैं की करां।

वार तार मैं खूब परताये
कबरा जां जां फुल्ल चढ़ाये
किस्मत दा न खुलया ताला मैं की करां –
हाय.....हाय नी मैं की करां।

स्याने दा घर भर भर थकया
दुःख समुन्दर फिर वी न सुकया
मेरा हो गया हाल बेहाला मैं की करां –
हाय.....हाय नी मैं की करां।

गुरुआं ने वी न राह विखाया
अपना ही पूजा पाठ कराया
सच्चे प्रभु दा न दित्ता हवाला मैं की करां –
हाय.....हाय नी मैं की करां।

भरमा भूता च दिन गये बीत
सब्भ कम्म पुट्ठे न सिद्धे कीते
पिंड छड्डया न झंझाला मैं की करां –
हाय.....हाय नी मैं की करां।

मैं नच्चा फिरा

भटक भटक जदो बाहिरो आई
मन अपने दी जोत जगाई
मैंनू लब्भ गये दीन दयाला
मैं नच्चा फिरां
अहा...अहा...नीं मैं नचा फिरां।

रो–रो अपना हाल सुनावां
मन चंचल कीवे चरणी लावां
मैंनू छड्ड के कदे न जाना
मैं अरजा करां
हां हां नीं मैं तरले करां।

प्रीतम मैंनू हिक नल लायां
दिल दा सारा दरद मिटाया
मैंनू कर दित्ता मालामाल
मैं नच्चा फिरां
अहा...अहा...नीं मैं नच्चा फिरां।

जगमग जोत जगे दिन राती
प्रीतम लब्भदे मारा झांती
प्रीतम नल बहके मैं निशदिन
मैं गल्लां करां.......
अहा...अहा...नीं मैं गल्लां करा।

चस्का लग गया जी

चस्का लग गया जी मुझको तेरे नाम का
रस्ता मिल गया जी मुझको तेरे धाम का

मन मंदिर में बैठ प्रभु जी छवि तुम्हारी देखूँ
मूरत मूरत चलती फिरती तेरी झांकी देखूँ
नशा चड़ गया जी मुझको तेरे नाम का
चस्का लग गया जी .... ।

फीका लागे माल खजाना कुछ न मन को भाए
संसार निःसार का रहस्य न कुछ भी मुझे समझ है आए
आनन्द रस पी लिया जी भर–भर तेरे नाम का
चस्का लग गया जी .... ।

मैं बौराई भटक रही थी ऋषियों ने समझाया
वेद ज्ञान का दीपक देकर सब अंधकार मिटाया
जगमग हो गया जी चप्पा चप्पा मेरे ध्यान का
चस्का लग गया जी .... ।

जगर मगर हुआ कोना कोना जीवन रस भर आया
पतझड़ के सूने आंगन ऋतुराज उतर था आया
झूमा नाच उठा पक्षी मन के ग्राम का
चस्का लग गया जी .... ।

आ बैठे हो मन मंदिर में अब न कभी भी जाना
माया की चमक–दमक में तुम मुझको न भरमाना
'चांद' को मिल गया जी सम्बल तेरे नाम का
चस्का लग गया जी .... ।

प्रभु है मेरे साथ

तर्ज – हम होंगे कामयाब............

प्रभु है मेरे साथ
पिता है मेरे साथ
चल रहे.........

हो......हो....... मन में है विश्वास
पूरा है विश्वास
प्रभु है मेरे साथ चल रहे।

नहीं डर किसी का आज
नहीं भय किसी का आज
हो.....हो......मन में है उल्लास
मन में है उल्लास
प्रभु है..।

बीती गम की काली रात
आई सुन्दर सुप्रभात
हो.....हो..... फैला है प्रकाश
फैला है प्रकाश
प्रभु है..।

हम चले हैं साथ–साथ
हम चलेंगे साथ–साथ
युग युगों, अनन्त काल
जन्म–जन्म का साथ
प्रभु है ....।

खुशियां मिलती तेरे मंदिर में

खुशियां मिलती तेरे मंदिर में
आशीषें मिलती तेरे मंदिर में
बैठा रहूँगा, बैठा रहूँगा
अब तो न आऊँगा।

मौन को तोड़ो कुछ तो बोलो
मैं तो बुलाऊँगा
लौटाते रहोगे कब तक दर से
मैं मुड़ आऊँगा –
अब तो न जाऊँगा।

मैला मैला दर्पण मेरा
चंचल चंचल मन है मेरा
उखड़ा बिखरा जीवन मेरा
कह न पाऊँगा –
अब तो न जाऊँगा।

आंखों की भाषा तुम पढ़ लेना
पीड़ा चिन्ता सब लख लेना
जंजीर पड़ी विषयों की ऐसी
उठ न पाऊँगा –
अब तो न जाऊँगा।

तुम तक आना
तुम तक जाना
संगी साथी साथ पुराना
बिछुड़ के तुमसे इक पल को भी
रह न पाऊँगा –
अब तो न जाऊँगा।

माना मेरी न कोई हस्ती
घर न घाट, न कोई बस्ती
तुम बोलो न चाहे बोलो
तुम्हें बुलाऊँगा –
अब तो न जाऊँगा।

जो तुम हमसे न बात करोगे

जो तुम हमसे न बात करोगे
प्यार की न बरसात करोगे
बैठे रहेंगे बैठे रहेंगे
द्वार पे तेरे हम
द्वार पे तेरे हम ।

हृदय की थाली धर आपा सारा
प्राणों जलाकर दीपक प्यारा
श्वासों का लेकर इकतारा
गाते रहेंगे, गाते रहेंगे
गाते रहेंगे हम ।

गर्मी, सर्दी बादल–बरखा
उलझन–भटकन, आपद–विपदा
लेख लिखे बैठी कहीं विधना
खिलते रहेंगे फलते रहेंगे
पुष्पों के कानन हम ।

अश्रु हमारे झर–झर बहेंगे
मन सन्यासी न दर से टलेंगे
उपरामत खंड टूट गिरेंगे
पाषाण पत्थर पिघल के रहेंगे
मानो न जानो न तुम ।

हम अपना इतिहास बनेंगे
मन की पीर तुम्हीं से कहेंगे
मन प्राणों की संजीवनी बूटी
लेके न आये गर जो तुम इक दिन
बैठे रहेंगे, बैठे रहेंगे द्वार पे तेरे हम ।

तुम कर लो सभी से प्यार

तुम कर लो सभी से प्यार–प्यार
मिलेगा यह जीवन न बार–बार।

हीरे जवाहिर पास नहीं हैं
बड़ी यह कोई बात नहीं है
प्यार की दौलत मिले अगर जो
मत करना इन्कार
तुम कर लो सभी से प्यार–प्यार..........।

प्यार की कलियां चुनते जाना
भय नफरत से न घबराना
वैरी को दे सको यदि तुम
देना ह्रदय का प्यार–प्यार
तुम कर लो सभी से प्यार–प्यार..........।

प्यार की गंगा हर सूँ बहाना
टूटे ह्रदय को धीर बंधाना
एक बार जुट जो तुम जाओगे
मार्ग रहेगा न दुश्वार........वार
तुम कर लो सभी से प्यार–प्यार..........।

कौन है अपना कौन पराया
भगवान ने सबको समान बनाया
जात पात के तोड़ के बंधन
कर लो खुला घर बार–बार
तुम कर लो सभी से प्यार–प्यार..........।

तुम जो थिरके हृदय में (गीत)

तुम जो थिरके हृदय में
सितार बज उठे
मेघ मल्हार मालकौस
राग बज उठे।

वो गुदगदी वो मस्तियां
मन प्राण खिल गएं
वो फागुनी ब्यार
हंसी के झांझ बज उठे।

नीचे धरती अम्बर पै
कौंधे बिजलियां
तन पागल जो झूमा
पलाश झर उठे।

प्राण स्तब्ध मूर्छित मन
काल प्रवाह बह गए
मादक खामोशियों के
साज बज उठे।

झर–झर झरते झरने
आबशार बह चले
बहते दरिया के धुन पै
नाद बज उठे।

झनझना कर गिर पड़ा
अहंकार आईना
टुकड़े हजारों में
फानूस जल उठे।

सानू देयो बधाईयां नी

सानू देयो बधाईयां नी के साड़ी प्रीत प्रभु नल लागी
साडा प्रियतम कण–कण वस्से,
साडे दिल विच खिड़–खिड़ हस्से ।
स्वांसा च बसाया जी के साडी प्रीत प्रभु नल लागी–
सानू देयो बधाईयां नी.. ।

प्रभु प्यार दा मींह प्या वस्से,
साडे दिल दा गुलशन हरषे ।
आई रूत मस्तानी जी के साडी प्रीत प्रभु नल लागी–
सानू देयो बधाईयां जी.. ।

जदों ज्ञान चक्षु नल डिट्ठे,
प्रभु लगे बड़े ही मिट्ठे ।
असां आप परनाये जी के साडी प्रीत प्रभु नल लागी–
सानू देयो बधाईयां जी.. ।

झर–झर झरनें झरदे नी....
सर सागर जा मिलदे नी....
असां आप मिटाया नी प्रभु जी दा दर्शन पाया जी...
सानू देयो बधाईयां जी.. ।

असां भर लई प्रेम घड़ोली
प्रियतम नल खेडी होली
रंग खूब बरसाये जी के साड़ी प्रीत प्रभु नल लागी–
सानू देयो बधाईयां जी.. ।

आदरणीया बहिन जी ... प्रज्ञा जी के जन्म दिन पर

जन्म दिन की बधाई

बिछी है चांदनी पग–पग
प्रफुल्लित प्राण है डग–मग
समय ने छेड़ी है सरगम
बजाए जांझ है रिमझिम
बधाई हो तुम्हें यह दिन
बधाई हो जन्म दिन।

ऋचाएं साम की पावन
तेरा अभिषेक करती हैं
यजु से यज्ञ की ज्वाला
नवोदय गान करती है
ऋजु पथ बज रही नोबत
अथर्व आर्शीवाद दें पल–पल
पड़े है मेघ तबले पर
हवा की थाप धिन.....न.....धिन
बधाई हो तुम्हें यह दिन
बधाई हो जन्म दिन।

बिछी पुष्पों की है जाज़िम
सजी तारों की है महफिल
पायलिया प्राण की पहने

चला जाए कोई रुनझुन
अदन के बाग से आई
खुशी की डालियां चुनचुन
झींगुरों के साज बजते हैं
झन.....न.....न झन, झन.....न.....न झिन
बधाई हो तुम्हें यह दिन
बधाई हो जन्म दिन।

जन्मदिन पर तुम्हारे
धरा ने रंगोली सजाई है
झिलमिल जुगनुओं ने बीहड़ो (में)
दिवाली मनाई है
हंसी के अनार फूटे हैं
दिल ने फुलझड़ियां चलाई हैं
वरूण के पाश हैं कोमल
सृष्टि खुद खिचती आई है
बजे है जलतरंग टन....न....न टिन.....टिन
बधाई हो तुम्हें यह दिन
बधाई हो जन्म दिन।

मां शारदा हंस हंस मणि मुक्ता
मणि मुक्ता जुटाती है
वैदिक लोरियां देकर
तुझे झूला झुलाती है
हवाएं प्यार में आकर
तेरी अलकें उड़ाती हैं

प्रज्ञा वादिका है
ब्रह्मानन्द बांटती दिन....न....न....दिन....दिन
बधाई हो तुम्हें यह दिन
बधाई हो जन्मदिन।

जगत प्रस्तर न हो जाए
मधुर रस घोलती रहना
शमाएं वेद की लेकर
तुम तम में कौंधती रहना
परमपद मिल भी जाए जो
जहाँ में लौटती रहना
यश मन्दाकिनी तेरी
बहे अविरिल यूँ ही दिन....दिन
बधाई हो तुम्हें यह दिन
बधाई हो जन्मदिन।

कान खोलकर बी.पी (Blood Pressure) सुनले

कान खोलकर बी.पी सुनले
झांसे में न आऊँगी
चिन्ता फिकर न टैंशन करके
घर न तुझे बुलाऊँगी।

तूँ ढूंढेगा नस—नस में मुझको
मैं पंछी बन उड़ जाऊँगी
खुशियों की कूंजी संग उड़ती
बदली में खो जाऊँगी।

मूर्ख मैं थी कितनी जिसने
खुद ही पाप कमाया था
रोगों का घर खुद अपनी भूलों से
यह शरीर बनाया था
होश आ गया अब तो मुझको
चाल तेरी न आऊँगी।

परमपिता ने बिठा के मुझको
सच्चा ज्ञान बताया है
गूढ़ अबूझ रहस्यों का मतलब
सभी समझ में आया है
जा बैठूँगी दर पे उसके
घास न तुझको डालूँगी।

चिन्ता फिकर धर उसके कान्धे
उसके संग में नाचूँगी
जो देगा वो हंसी खुशी में
उसमें ही मैं जी लूँगी
हाथ पकड़ मैं जी लूँगी
तुझसे न आँख मिलाऊँगी।

जीवन के सुच्चे मोती में
उस पे ही बिखराऊँगी
रो–रो झींक–झींक कर
अब न उमर बिताऊँगी
'चाँद का' है यह पक्का वादा
आजीवन खूब निभाऊँगी।

आंख मेरी देखेगी

आंख मेरी देखेगी।
प्रभु ने इसमें जोत जलाई
सकल सृष्टि मुझको दिखलाई
खेल तमाशे रंग प्रभु के देखेगी –
आंख मेरी देखेगी.....................।

घोर तमस से न घबराएगी
उजाले कलश भर–भर लाएगी
रचना प्रभु की बड़े चाँव से देखेगी –
आंख मेरी ....।

सकल जगत के वो हैं नियन्ता
दुःख भव भजक चिन्ता हन्ता
आंधी हो तूफान आंख मेरी जीतेगी –
आंख मेरी ....।

ब्रह्मांड के डॉक्टर पिता हमारे
चांद सूरज चले जिनके सहारे
आनन्दमगन हो हर बाजी को जीतेगी –.
आंख मेरी ....।

गहरा राज़ है

मेरी हँसी

मेरी खुशी का

गहरा राज़ है

तूँ..........तूँ

हर पल मेरे

साथ साथ है।

कोई कुछ कहे

कहता रहे

परवाह कुछ नहीं

जो भी मिला

हँस के लिया

ईर्ष्या और डाह नहीं

गुनगुनाते चल रहे

हाथों में हाथ है

तूँ मेरे हर पल मेरे

साथ साथ है

भय चिन्ता स्वतः

काफूर हो गए

ग़म आए जो भी

राह में

चूर हो गए

स्तब्ध मन

निश्चेष्ट तन

चेतना के द्वार

खुल गए

देखने को दो

एक जान हो गए

छूटा जुड़ा है क्या

न कोई आभास है

तूँ..........तूँ

हर पल मेरे

साथ–साथ है।

वेद की पावन ध्वजाएं

वेद की पावन ध्वजाएं जग में फहराते चलो
जिन्दगी के साज़ धुन ओम् की गाते चलो।

ईश की ज्योति से ज्योतित नक्षत्र सृष्टि ब्रह्माण्ड है
दीप से दीपक जला कर अंधकार को हरते चलो ।

गॉड, अल्लाह, ओम्, वाहेगुरू ईश के सब नाम हैं
मतमतान्तरों को भुला मिल एक सुर गाते चलो ।

मनुष्यता है धर्म अपना मनुष्यता ही कर्म है
मनुष्य बन मनुष्यता की सुरभि फैलाते चलो ।

खुश रहो भई खुश रहो यही ज़िन्दगी का राज है
मन के गुलशन खुशियों के फूलों से महकाते चलो ।

मिल चलो और मिल के बोले यही वेद का संदेश है
शान्ति की चल डगर पर स्वर्ग धरा बनाते चलो ।

वेद की प्रचारिका

चेहरे पे ब्रह्म तेज है
वाणी से छलके ओज है
यौवन के शैल तुंग पर
कैसा विचित्र योग है
प्रकाशपुंज बन उठी
जो थी कभी निहारिका –
विश्व की उद्धारिका, वेद की प्रचारिका।

पोर–पोर श्वास–श्वास
ओ३म् नाम हो गया
अद्भुत प्रकाश में लिपट
जीवन अनाम हो गया
अमृत के घट को बांटती
चल पड़ी परिव्राजिका।
विश्व की उद्धारिका, वेद की प्रचारिका।

प्रभंजन जो आए राह में
चूर–चूर हो गए
लोकेषणा के राग सब
दूर–दूर हो गए
तम की क्रोड़ में पली
दीपों की दीप मालिका
विश्व की उद्धारिका, वेद की प्रचारिका।

भारत तो अपना देश था
वसुधा कटुम्ब हो गई
भेदभाव की डगर
बीहड़ों में खो गई
अनहद के राग छेड़ती
गुंजाती वन अहालिका
विश्व की उद्धारिका, वेद की प्रचारिका।

रज चरण जहाँ पड़ी
ऋद्धि सिद्धि बिछ गई
निर आकार ब्रह्म की
चांदनी है खिल गई
प्राणों के वन में डोलती
तारों में कोई तारिका
विश्व की उद्धारिका, वेद की प्रचारिका।

निर्वाण दिवस

निर्वाण दिवस आया
और याद ऋषि की लाया है।

शिवरात्री की घटना ने
उन्हें सत्य का ज्ञान कराया
पत्थर का वुत भगवान नहीं है
जो मानुष्य बनाया।
सच्चे गुरु की खोज ऋषि ने
खाक थी दर–दर छानी
मथुरा में तब मिला उन्हें था
विरजानंद सा ज्ञानी।

वेद शास्त्रों का अध्ययन करके
घर जाने की ठानी
लौंगों की दक्षिणा अर्पित कर
गुरु से आज्ञा मांगी
गुरु ने कहा –
दयानंद जाओ
अज्ञान अविधा मिटाओ
भारत के भूले भटकों को
वेद का मार्ग दिखाओ।

गुरु से आशीर्वाद ले निकला
शिष्य था आज्ञाकारी
पाखण्ड खंडिनी पताका फहराकर
दुनियां में धूम मचा दी।

सदियों से सोई आर्यजाति को
ऋषि ने आन जगाया
हिन्दू समाज में पनपी कुरीतियों को
मिटाने का बीड़ा उठाया।

वर्षों से शोषित नारी को
उच्च स्थान दिलाया
नारी से पूजित गृह को
देवस्थान बताया।

आर्यसमाज की नींव रखी
और अछूतोद्धार किया
बाल विवाह की निंदा कर
विधवा प्रचार किया
सत्यार्थ प्रकाश लिखकर उन्होंने
सत्य का ज्ञान कराया
गौ करुणा निधि में उन्होंने
गौ का महत्व बताया।

विष के प्याले पीकर भी
ऋषि नहीं घबराए
अपने हत्यारे की रक्षा करने में
तनिक भी न सकुँचाए।

मौत खड़ी थी सामने उनके

वो थे रहे मुस्कराए
ईश्वर इच्छा पूर्ण करने को
सिर था सदा झुकाए।

अमावस्या की अंधियारी में
थे असंख्य दीप जगमगाए
आर्य जाति को जगाने वाले
ऋषि नजर न आए।

ऋषि तो चले गए जगत से
उनके उपदेश हैं राह दिखाते
आर्य जाति को अब भी रह–रह
कर्त्तव्य का बोध कराते।

ऋषि भक्त कहलाने वालो
कुछ तो कर दिखलाओ
कृणवन्तो विश्व आर्यम् का
जग को नाद सुनाओ
सब को आर्य बनाओ
हां सब को श्रेष्ठ बनाओ।

हम वतन के नौजवां हैं

चांद सी उजली है धरती
सोने जैसा आसमां
मुक्ता मणि गिरिराज हिमालय
नीलम जैसी नदियां
आंख भर देखे क्यों कोई
हम वतन के नौजवां
हम वतन के नौजवां है
हम वतन के पासबां ।

इसकी माटी माटी न समझो
इसमें चंदन है घुला
वीरों का है शौर्य इसमें
ऋषियों का तपोबल भरा
प्यार का संगम यहाँ पर
शान्ति की त्रिवेणियां
बंजरों में फूल खिला दे
हम है ऐसे बागबां ।

कोई कह दो चीन से
और कोई पाकिस्तान से
घुड़कियों से डरते नहीं है
शेर हिन्दोस्तान के
गिरते हैं बन के बिजली
युद्ध के मैदान में
त्राहि त्राहि चहुँ और मचादे
हम है ऐसे सूरमां ।

साडा देश महान साथिया

साडा देश महान साथिया
साडा देश महान

वेद ने इसदे चानन मनारे
गीता देवे कर्म हुलारे
गुरुग्रन्थ तो छलके अमृत
चंवर झुलाए कुरान साथिया ।

अमर शान्ति है इसदा नारा
भाई चारा है सबनू प्यारा
मेहनत ऐत्थे पूजा भक्ति
जय हिन्द है रणगान साथिया ।

हिन्दू मुस्लम सोहनियां अक्खां
पारसी झुलदे वांगू रुक्खां
फुल्ल इसाई टह टह टहकन
सिक्ख इसदी जिन्द जान साथिया ।

मौत साडे कोलो थर थर कम्बदी
तरले मिनता हाड़े करदी
वैरी मुड़ मुड़ तौबा करदा
नक्क रगड़े शैतान साथिया ।

आओ इसदी शान बधाईए
फुट चदरी किते दूर नसाईए
असी भावे रहिएं न रहिए
साडा जीवे हिन्दोस्तान साथिया ।

स्वतंत्रता गीत

तर्ज – आज कल में ढल गया...........

देश हमारा आज़ाद है
मां के सिर पर ताज है
भूल न जाना भाईयो
शहीदों की कुरबानियां

छलकपट से अंग्रेज ने
भारत गुलाम बना लिया
सोने की चिड़िया देश का
सारा था धन हर लिया ।

व्यापार चौपट हो गया
हाहाकार मच गया
भूख से पीड़ित लोग थे
इंगलैंड समृद्ध हो गया।

गोरों की नीतियों से क्षुब्ध
हर देशवासी हो गया
विदेशी साम्राज्य के विरुद्ध
विद्रोह था पनप उठा ।

झांसी की रानी चल पड़ी
तांतिया को साथ ले
देख के उसकी वीरता
चौंक उठे–अंग्रेज थे ।

इधर लक्ष्मी बाई ने
स्मिथ को करारी हार दी
उधर सेनायें एक हो
देहली की ओर चल पड़ी

दिल्ली स्वतन्त्र हो गई
स्वदेशी सरकार बन गई
बहादुरशाह को सम्राट बना
गुलामी की बेड़ी कट गई ।

भारतीयों का शौर्य देख
गोरी सरकार कांप उठी ।
कंपनी के हाथ बागडोर दे
सत्ता स्वयं सभाल ली ।

दमन चक्र चल पड़ा
कईयों को फांसी चड़ा दिया
एकता के अभाव ने
चौपट था सब कुछ कर दिया ।

अंग्रेजों ने एक–एक कर
समूचा भारत हड़प लिया
जो भी आया राह में
उसको मसल के रख दिया

टीपू सुलतान न रहा
बाजिद अली शाह मिट गया
सत्ता के लोभ में मीर जाफर
भी था बिक गया ।

जागृति की लहर जो चली
भारत में फैलती गई
लाख दबाया अंग्रेज ने
उठी जो फिर मिटी नहीं

विरजानंद ने यहाँ वहाँ
लोगों को जा जगा दिया
स्वामी दयानंद ने स्वराज्य का
अर्थ उन्हे समझा दिया

स्वतन्त्रता जन्म सिद्ध अधिकार है
अहिंसा बड़ा हथिहार है
जागो देश वासियो
देश से गर जो प्यार है ।

भारत के कोने कोने में
तूफानी दौर चल पड़ा
"अंग्रेजों भारत छोड़ दो"
बच्चा बच्चा कह उठा ।

रक्त की नदिया बह चली
कुरबानियां घटी नहीं
सिर पे कफन बांध कर
टोलिया थी चल पड़ी

जेलें सभी थी भर गई
गिरफातारियां रूकी नहीं
लाख बुझाया अंग्रेज ने
शमे–आजादी बुझी नहीं ।

भक्त, गुरू, सुखदेव ने
हंस हंस चूमी फांसियां
चन्द्रशेखर आजाद ने
सीने पे खाई गोलियां

लाजपत राय दहाड़ उठे
फिरंगियों से कह उठे
"लाठियों का प्रत्येक वार
कील कफन बन जाऐगा।"

सुभाष ने विदेश जा
सेना नई तैयार की
बढ़े चलों के नाद से
समूची धरा थी हिल गई ।

गांधी जवाहिर डट गए
कष्ट सहे पीछे न हटे
रंग लाई सैंताली में
शहीदों की कुरबानियां

देश को स्वतन्त्र हुएं
64 वर्ष है हो गए
गांधी, जवाहिर, पटेल से
रहनुमा भी न रहे ।

इन्दिरा गांधी चली गई
लाल बाहदुर न रहे
याद रहेंगी युगों युगों
उनकी अमिट कहानियां ।

स्वतन्त्र देश के नागरिको
स्वतन्त्रता रखना संभाल कर
सींचा जिसे है खून से
रखना वो गुलशन संभाल कर ।

चांद दीपिका : कहानीकार, कवयित्री (हिन्दी पंजाबी) एवं शिक्षाविद्, योग शिक्षक

आवास : गृह क्रमांक 323, कोटली कालोनी (रिहाड़ी कालोनी), जम्मू तवी-180005

दूरभाष, मोबाइल : 2583955, 9419694912, 9419[illegible]202

जन्म : कोटली (पाक अधिकृत) (जिला मीरपुर)

माता-पिता : श्रीमती प्रकाश देवी गुप्ता, श्री रामलाल [illegible]

शिक्षा : एम.ए. (पोलीटिकल साइंस), बी.एड., एम.एड.,

प्रिंसिपल (रिटा.) : स्टेट इंस्टीच्यूट ऑफ एजूकेशन (रिसर्च आफिसर), डिस्ट्रिक्ट इंस्टीच्यूट ऑफ एजूकेशन एंड ट्रेनिंग (एच.ओ.डी)

प्रकाशित पुस्तकें : 1. मेरा घर कित्थे है? (पंजाबी) 2. उपहार हिन्दी 3. मेरा घर कहाँ है? (हिन्दी अनुवाद) 4. फुहार (आत्म गान)

प्रकाशित रचनाएँ : शीराज़ा (हिन्दी), शीराज़ा (पंजाबी), शीराज़ा डोगरी, (Cultural Academy J&K), सरिता, केसर महिका,विपाशा कला संस्कृति भाषा, शिमला (हिमाचल प्रदेश), राजभाषा इस्पात भाषा भारती, नई दिल्ली।

रेडियो से प्रसारित : ऑल इंडिया रेडियो जम्मू से हिन्दी, पंजाबी में कविता, कहानी, लेख आदि रचनाएं प्रसारित ।

पुस्तक प्राप्ति का पता : वरुण गुप्ता, क्वार्टर नं. 323, रिहाड़ी कालोनी, जम्मू तवी-180005 (जम्मू-कश्मीर)